8

आत्मिक इस्राएल

''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है'' (1 पतरस 2:9, 10)।

अधिक समय नहीं हुआ, हार्डिंग यूनिवर्सिटी में नये नियम की समीक्षा की अपनी कक्षाओं में मैंने ''समय पूरा होने'' पर मसीह के इस जगत में आने के बारे में बताया था। तुरन्त एक छात्र का हाथ खड़ा हो गया और वह युवक बड़ी उत्सुकता से पूछने लगा, '' 'समय पूरा होने' का क्या अर्थ है ?'' मैंने उन्हें गलतियों 4:4,5 खोलकर मसीह के जन्म के बारे में पौलुस के शब्दों को पढ़कर बताया: ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।''

मैंने समझाया कि ''समय का पूरा होना'' वह समय था जब परमेश्वर ने अपनी अनन्त बुद्धि और अग्रविचार से हमारे उद्धारकर्त्ता के रूप में मसीह के इस संसार में आने का उचित समय ठहराया था। इसे दूसरे ढंग से कहें, तो हमारे उद्धारकर्त्ता के जन्म से पूर्व परमेश्वर की ओर से योजना और तैयारी की गई थी। उसका आना हमारे स्वर्गीय पिता के मन में अकस्मात आने वाली बात नहीं थी जिसे बिना सोचे-समझे पूरा कर दिया गया; बल्कि, उसके आने की बात का खाका जगत की नींव रखने से पहले ही परमेश्वर के दिमाग में था। उसके लिए आवश्यक घटनाएं घट चुकने और संसार के इस ईश्वरीय हस्तक्षेप के लिए तैयार हो जाने पर यीशु का जन्म हुआ। पौलुस द्वारा इतिहास के उस घटनाक्रम को ''समय का पूरा होना'' कहना उचित ही है।

पुराने नियम का सम्पूर्ण काल अर्थात पुरखाओं और मूसा के युगों का समय मसीह के आने के लिए तैयारी का समय था। पुरखाओं के युग में, परमेश्वर ने इब्राहीम और याकूब को अपने सेवक होना चुना जिनके द्वारा उसने एक जाति की रचना करनी थी जिसे उसने अपने

नाम से पुकारना था। उसने इस जाति को ''इस्राएल'' कहा, यह वह नाम था जो उसने याकूब को दिया था। मूसा के युग में, परमेश्वर ने अपनी चुनी हुई जाति को अपनी व्यवस्था दी थी, जो उसने सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा प्रकट की थी। उसने उन्हें अपने पवित्र लोगों के रूप में आराधना करना और जीवन बिताना सिखाया। फिर भी, पुराने नियम के दौरान परमेश्वर के सभी कार्य वास्तव में ''समय के पूरा होने'' पर मसीह को संसार में लाने के लिए, तैयारी अर्थात पूर्व व्यवस्था ही थी। किसी ने कहा है, ''पुराने नियम की कहानी एक जाति की कहानी है, और नये नियम की कहानी एक व्यक्ति की कहानी है।''

क्योंकि पुराने नियम की कहानी इस्राएल जाति की कहानी है, और इस जाति की रचना संसार में मसीह को लाने के लिए परमेश्वर का तैयारी का काम था, इसलिए हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि पौलुस ने प्रभु की कलीसिया को परमेश्वर का इस्राएल कहा था: ''और जितने इस नियम पर चलेंगे, उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे'' (गलतियों 6:16)। न ही हमें यह हैरानी होती है कि पौलुस ने प्राचीन इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के सम्बन्ध से शब्द लेकर कलीसिया को सांकेतिक रूप से दर्शाया है: ''क्योंकि खतना वाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते'' (फिलिप्पियों 3:3)। ''इस्राएल'' के रूप में कलीसिया का यह चित्र हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए, क्योंकि इससे हमें यह पता चलता है कि मसीही लोग आज भी आत्मिक इस्राएल हैं और उन्हें प्राचीन इस्राएल की तरह ही परमेश्वर के अपने लोगों के रूप में पृथक किया गया है!

नये नियम में 1 पतरस 2:9,10 की पुष्टि शायद सबसे संक्षिप्त है कि कलीसिया नये नियम का इस्राएल है। पतरस ने 1 पतरस 1:22–2:10 में यह समझाते हुए कि एक मसीही बनने का क्या अर्थ है, मसीही व्यक्ति के परिवर्तन (1:22–25), आचरण (2:2, 3) और बुलाहट (2:4–10) की बात की है। उसने अपने पाठकों को इस सच्चाई से आनन्दित होने के लिए कहकर कि मसीही लोग परमेश्वर के चुने हुए अर्थात उसका असली इस्राएल है, समाप्त किया।

1 पतरस 2:9,10 में परमेश्वर के इस्राएल के रूप में मसीही लोगों के पतरस के हवाले पर ध्यान करें। यह तुलना परमेश्वर के साथ हमारे विशेष सम्बन्ध और परमेश्वर की ओर से हमारी विशेष बुलाहट की पुष्टि करती है; यह हमें मसीह में मिलने वाली आत्मिक आशिषों में आनन्द करने का कारण देती है, इन आयतों से हमें समझ आएगी कि हम आत्मिक इस्राएल हैं।

एक चुना हुआ वंश

आत्मिक इस्राएल के रूप में कलीसिया का वर्णन करते हुए, पतरस ने पहले कहा कि मसीही लोग ''एक चुना हुआ वंश'' हैं (1 पतरस 2:9)। उन्हें चुना गया है, बाहर निकाला गया है और अलग किया गया है। वे परमेश्वर की ईश्वरीय इच्छा से चुने हुए लोग हैं, जिन्हें पृथ्वी के सब लोगों में से बुलाया गया है।

परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा इस्राएल को बताया था, ''क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे'' (व्यवस्थाविवरण 7:6)। फिर, उसने इस्राएल के लिए कहा था, ''इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है'' (निर्गमन 19:5)।

परन्तु, मानवीय इतिहास के इस अन्तिम युग में, शरीर के अनुसार इस्राएली नहीं बल्कि मसीही लोग परमेश्वर का चुना हुआ वंश हैं। पुराना इस्राएल नये इस्राएल अर्थात कलीसिया का आधार बना और पूर्ण हुआ। पौलुस ने कहा कि यह परमेश्वर की पहले से ठहराई गई इच्छा थी कि मसीह में आने वाले सभी लोग उसका चुना हुआ वंश बनें:

> जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, ... उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने (इफिसियों 1:4, 5, 11)।

हम सभी को छोड़े जाने, त्यागे जाने या उपेक्षित होने का कड़वा अनुभव है। हम अन्त तक पूरी तरह से छोड़े जाने या अपमानित होने को देखते रहे जबकि दूसरों को मनोनीत या नियुक्त कर लिया गया। हम में से कइयों को बचपन में खेल के लिए टीमों के चुने जाने पर निराशा हुई थी; या तो दूसरों को हमसे आगे चुना गया या हमें पूरी तरह से केवल स्कोर गिनने के लिए छोड़ दिया गया था। दूसरों का नाम पहले और बड़े सम्मान से सूची में आने पर हम में से कइयों को ऐसी भयंकर स्थिति से गुजरना पड़ा है। हम बड़ी उम्मीद से सुनते रहे कि शायद अन्त में गलती से हमारा नाम भी आ जाए। इस प्रकार के प्रकरण हमें निराश करते हैं और लम्बे समय तक हमारे दिलो दिमाग में रहकर हमारी अपनी छवि को धूमिल करते हुए समझाते हैं कि हम ''कुछ नहीं'' हैं। ये अप्रिय घटनाएं हमारे साथ उस मनोवैज्ञानिक की तरह बुरा व्यवहार करती हैं जिसके पास आने वाले एक अभागे व्यक्ति ने बिनती की, ''डॉक्टर साहिब मैं हीन भावना का शिकार हूं, और समझ नहीं आता कि मैं क्या करूं।'' कई बार उस रोगी से बात करने के बाद मनोवैज्ञानिक ने उसे बताया, ''भई, तुम में कोई हीन भावना नहीं है; तुम ही हीन हो!''

जिन परिस्थितियों से लोग गुजरते हैं वे सामान्यत: इसलिए बनती हैं क्योंकि लोगों की योग्यताओं पर अत्यधिक ज़ोर डाला जाता है, लोग कैसे हैं, वे कैसे दिखते हैं, कितने स्मार्ट या सुन्दर हैं, या उनके पास क्या है। अत:, जब हमारे साथ ऐसा होता है, तो यह बहुत विनाशकारी होता है, क्योंकि इससे हमें लगता है कि हमारे अन्दर इतनी योग्यता नहीं है, हम इतने अच्छे नहीं लगते, या इतने स्मार्ट नहीं हैं या हमारे पास इतना धन नहीं है।

पतरस के अनुसार, मसीही लोग परमेश्वर का चुना हुआ वंश हैं। वह कहता है कि यह इसलिए सत्य नहीं है, कि हम बहुत गुणी हैं, अच्छे दिखते हैं या सबसे स्मार्ट हैं, या हमारे पास सबसे अधिक धन है, बल्कि इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, हमने विश्वास से परमेश्वर की आज्ञा मानी है और उसकी संतान अर्थात कलीसिया बन गए हैं। परमेश्वर से हमारी यह स्थिति परमेश्वर की दया के कारण बनी है, हमारे धन या मानवीय गुण के कारण नहीं। पतरस कहता है, ''... तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है'' (1 पतरस 2:10)। पौलुस ने तीतुस को बताया कि, ''उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ'' (तीतुस 3:5)। मसीह में हमारा बपतिस्मा होने पर, हमने परमेश्वर की दया पाई और उसके चुने हुए वंश में शामिल हो गए।

यह एक शक्तिशाली सच्चाई है कि हम आज परमेश्वर का इस्राएल हैं जो कि इतनी शक्तिशाली है कि यह हमें आशा और आश्वासन के साथ इतना सुपर चार्ज कर देती है कि घबराने वाली परिस्थितियां और शत्रु व संसार हमसे छीन नहीं सकता। उदाहरण के लिए, हमारे मन में परमेश्वर के पास प्रार्थना में भरोसा और दृढ़ता बैठ जानी चाहिए। हम आवश्यकता के किसी भी समय या जब भी हम उसकी स्तुति और धन्यवाद करना चाहें, भरोसे से उसके सिंहासन के पास आ सकते हैं। इससे हमें परमेश्वर की सामर्थ में जीवन बिताने की प्रेरणा मिलनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर के चुने हुए लोग होने का अर्थ है कि परमेश्वर के भण्डार की आत्मिक आशिषें कभी भी हमारे लिए बन्द नहीं होती (इफिसियों 2:18)।

आइए हम आनन्दित हों कि हम उसके चुने हुए वंश हैं।

याजकों का समाज

दूसरी बात पतरस ने कही कि कलीसिया ''याजकों का [शाही] समाज'' है (1 पतरस 2:9)। मसीही लोग आज परमेश्वर के याजक हैं। एक देह के रूप में वे याजकों का राज्य हैं।

पुराने नियम के समयों में, परमेश्वर ने अपने लोगों को लेवीय याजकों द्वारा अपने तक पहुंच प्रदान की थी। उसने लेवी के गोत्र से अमराम के परिवार में से याजकों के आने को चुना था। वे उसके लिए लोगों के बलिदान भेंट करते थे, और मूसा की व्यवस्था में बताए गए तरीकों के अनुसार वे उसकी आराधना में इस्राएल की अगुआई करते थे।

परमेश्वर ने लेवी के गोत्र से कहा, ''... तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं'' (गिनती 18:20)। आराधना, सेवा और जीवन में लेवियों को परमेश्वर की सेवा करने का विलक्षण सम्मान प्राप्त था। उनकी परमेश्वर के पास पहुंच और उसके साथ मज़बूत सम्बन्ध थे।

1 पतरस 2:9 में पतरस ने कहा कि लेवियों की याजकाई अब नहीं रही, और प्रभु ने एक नई याजकाई चुन ली है। छुटकारे के मसीह के काम द्वारा, उसने मसीही युग में याजकाई के लिए अपनी कलीसिया को नियुक्त किया है।

परमेश्वर ने न केवल अपनी कलीसिया को याजकाई कहा; बल्कि उसने इसे ''राजकीय/

शाही'' याजकाई भी कहा है। कलीसिया याजकों या शाही याजकों का राज्य है। सताए जा रहे मसीहियों के नाम पतमुस नामक टापू से यूहन्ना ने लिखा कि उसने, ''हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; ...'' (प्रकाशितवाक्य 1:6)। पतरस ने भी कहा, ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। मसीही व्यक्ति पवित्र आत्मा की सहायता से (रोमियों 8:27) और यीशु की सिफारिश से, जो हमारा मध्यस्थ और महायाजक है, सीधे परमेश्वर तक जा सकता है (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 7:26, 27)। एक मसीही परमेश्वर के पास यीशु मसीह को छोड़ किसी और मध्यस्थ के द्वारा नहीं जाता। वह परमेश्वर के सामने परमेश्वर के याजक के रूप में खड़ा हो सकता है और मनुष्य के ठहराए हुए याजकों, मरे हुए संतों या स्वर्गदूतों की सहायता के बिना परमेश्वर के पास अपनी बिनती ला सकता है।

''याजक'' शब्द का लातीनी भाषा में अर्थ ''पुल बनाने वाला'' है। पुल का विचार पुराने नियम के समय में याजक की भूमिका को दर्शाता है। याजक परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक आत्मिक पुल की तरह होता था। वह मनुष्य के पास परमेश्वर की इच्छा को लाता था और मनुष्य की बिनतियों को परमेश्वर के पास प्रस्तुत करता था। परमेश्वर याजक द्वारा लोगों के पास जाता था और लोग याजक द्वारा परमेश्वर के पास जाते थे। आज मसीही युग कितना भिन्न है! मसीही बनने अर्थात मसीह में आने के समय, व्यक्ति परमेश्वर का एक याजक बन जाता है।

परमेश्वर के याजक होने और परमेश्वर के काम के लिए पवित्र किए जाने की, इस पवित्र स्थिति का इस्तेमाल करने के लिए हमें उसकी संगति में रहने को विवश हो जाना चाहिए। परमेश्वर के याजक होने के कारण, हमें परमेश्वर के सम्मुख उच्च स्थान प्राप्त हुआ है।

आइए इस बात से आनन्दित हों कि हम ''याजकों का एक शाही समाज'' हैं।

पवित्र लोग

तीसरी बात जो पतरस ने कही कि मसीह की कलीसिया ''पवित्र लोग'' हैं (1 पतरस 2:9)। सांकेतिक भाषा में कहें, तो कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं अर्थात ऐसा राज्य है जो विशेष रूप से उसके लिए पवित्र ठहराया गया है।

इस्राएल को परमेश्वर के चुने हुए वंश के रूप में, पवित्र होने के लिए बुलाया गया था। मूसा के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल से कहा था, ''तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 19:2)। उसने उनसे और भी कहा था, ''और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे'' (निर्गमन 19:6)। पतरस ने इस्राएल के पवित्र होने की इस बुलाहट को ध्यान में रखते हुए, और शायद लैव्यव्यवस्था 19:2 से उद्धृत करते हुए अपना पत्र पढ़ने वालों को बताया, ''पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र

बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (1 पतरस 1:15, 16)।

परमेश्वर के लोग होने के कारण, मसीही लोगों को चाहिए कि वे परमेश्वर जैसे बनें। वह पवित्र है, और हमें भी अच्छे बच्चों की तरह अपने पिता के गुण अपनाकर अपने व्यक्तित्व और कार्यों में उसकी नकल करते हुए पवित्र बनना चाहिए (इफिसियों 5:1, 2)।

''पवित्र'' शब्द का साधारण अर्थ ''पवित्र उपयोग के लिए अलग करना है।'' मसीही लोगों पर लागू करने पर, इस शब्द का अर्थ होता है कि परमेश्वर के लोगों को उसकी भक्ति और सेवा के लिए अलग किया गया है।

एक मसीही दो देशों का नागरिक कहलाता है। एक वह देश है जिसमें वह *रहता* है और दूसरा वह है, जिसके प्रति वह *समर्पित* है। वह पृथ्वी के नागरिक के रूप में इस संसार में रहता है, परन्तु उसकी आधिकारिक नागरिकता परमेश्वर के देश में है, जो आत्मिक और स्वर्गीय है। पौलुस ने लिखा है, ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं'' (फिलिप्पियों 3:20)। जैसे ही एक मसीही यह सोचता है कि वह परमेश्वर के देश का नागरिक कैसे है, तो उसे एकदम सांत्वना और चुनौती मिलती है। सांत्वना उसके परमेश्वर से सम्बन्ध के कारण और चुनौती उस स्वर्गीय बुलाहट से मिलती है कि इस सम्बन्ध का अर्थ क्या है। पतरस ने कहा है कि पृथ्वी पर हमारे आचरण से, स्वर्ग में हमारे नागरिक होने की बात दिखाई देनी चाहिए। मसीही व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू में पवित्रता होनी आवश्यक है। पतरस कहता है, ''... अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो'' (1 पतरस 1:15)। हम क्या करते हैं, क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं इस सब से हमारा व्यक्तित्व दिखाई देना चाहिए।

एक मां अपने बच्चों को स्कूल में या किसी और कार्य के लिए भेजते समय जिसमें वे उससे थोड़ी देर के लिए अलग होते हैं, हमेशा कहती है, ''अब याद रहे कि तुम कौन हो।'' उसे उम्मीद थी कि उसकी बात कि वे कौन हैं उन्हें उस प्रतिरूप के अनुसार काम करने के लिए प्रेरित करेगी कि उनका व्यवहार उनके विश्वास से मेल खाता हो। यदि मसीही लोग स्मरण रखें कि वे कौन हैं अर्थात यह कि वे परमेश्वर के पवित्र लोग हैं, तो उन्हें पवित्र जीवन जीना ही पड़ेगा।

इस बात से आनन्दित हों कि हम ''पवित्र लोग'' हैं।

(परमेश्वर की) निज प्रजा

चौथी बात जो पतरस ने कही कि मसीही लोग परमेश्वर की ''निज प्रजा'' (1 पतरस 2:9) हैं। NASB में "a Pepole for God's own Possession" है, जो कि यूनानी वाक्यांश का अनुवाद और स्पष्ट ढंग से है। इसका अर्थ यह है कि मसीही लोग परमेश्वर की निजी सम्पत्ति हैं; और इस अर्थ में वे विशेष हैं।

परमेश्वर ने मूसा द्वारा सांसारिक इस्राएल से कहा था, ''क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने संसार भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे'' (व्यवस्थाविवरण 7:6)। उसने उनसे यह भी कहा था:

> और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे, और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा, नाम, और शोभा के विषय में तुझ को प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे (व्यवस्थाविवरण 26:18, 19)।

पतरस ने यह कहकर कि अब मसीही युग में, कलीसिया परमेश्वर की निजी सम्पत्ति के परमेश्वर के लोग होने की यह सुन्दर धारणा मसीह की कलीसिया पर लागू की है। तीतुस 2:14 में पौलुस ने यह कहते हुए कि मसीह ने ''अपने आप को हमारे लिए दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो'' (तीतुस 2:14) इस वाक्यांश की ऐसी ही प्रासंगिकता बनाई गई है।

कुछ वर्ष पूर्व, मैं अपने परिवार सहित एक सुसमाचार सभा के लिए वाशिंगटन डी. सी. में था। उस सप्ताह विश्वासी भाई हमें उस प्रसिद्ध नगर के कुछ बड़े-बड़े ऐतिहासिक स्थानों पर ले गए। उनमें से सबसे अधिक स्पष्ट रूप में मुझे वह थियेटर याद है जिसमें हमारे प्रिय राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की हत्या हुई थी। उस आदमी के महत्व के कारण मुझे इस स्थान ने बहुत प्रभावित किया था। उस स्थान के नीचे बने संग्रहालय को देखकर मुझे ध्यान आया कि नगण्य, व्यर्थ वस्तुओं का किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल या स्वामी होने के कारण महत्व बढ़ जाता है। एक जूता जिसका वास्तविक मूल्य बहुत ही कम है शीशे के बक्से में रखा गया है और इसका महत्व इतना इसलिए है क्योंकि इसे लिंकन ने उस दिन पहना था जिस दिन उसकी हत्या हुई थी। एक तुच्छ सी वस्तु का मूल्य किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के पास होने के कारण बढ़ गया।

हम मसीही लोग अपने आप में दूसरे से अच्छे नहीं होंगे, परन्तु जब हमें परमेश्वर की निज सम्पत्ति, परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाते और इनका स्वामी होने के रूप में देखा जाता है, तो सचमुच में हमारा महत्व बहुत बढ़ जाता है! इस अहसास से कि परमेश्वर ने हमें पृथ्वी के सब लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति बनाया है हमारे आत्म गुण व हमारा महत्व बढ़ जाना चाहिए।

अपनी मां के साथ खिलौना खरीदने के लिए खिलौने की दुकान में जाते हुए एक लड़के का चित्र बनाएं। बिक्री के लिए रखे खिलौने को देखते हुए, उसकी नज़र एक टूटी हुई नांव पर पड़ती है जिस पर एक पर्चा ''ऐसे ही बेचने के लिए'' चिपकाया हुआ है। उस सेलबोट अर्थात किश्ती की कीमत बहुत कम है पर लड़के को यही अच्छी लगती है। वह इसके लिए थोड़ा सा दाम चुका देता है। घर पहुंचते ही, वह इसमें सुधार करने के काम में जुट जाता है। इस पर थोड़ा सा गोंद लगाकर, लकड़ी का एक नया टुकड़ा चिपकाकर, और इसे पूरी तरह से नये सिरे से पेंट करके वह अपनी किश्ती से कह सकता है, ''मैंने तुझे मोल लिया है। मैंने तेरी मरम्मत की है। अब तुम पूरी तरह से मेरी हो!'' इसी प्रकार, मसीही लोग

परमेश्वर के हैं। उसने हमें अपने पुत्र का लहू देकर मोल लिया है, उसने हमें उसमें परिवर्तित करके नये सिरे से बनाया है और जैसे-जैसे हम उसके साथ चलते हैं, वह हमें निरन्तर बदलता रहता है। अब वह हमें छुड़ाकर कह सकता है, ''ये सचमुच मेरे लोग हैं।'' मसीह में परिवर्तित होने वाले हर व्यक्ति को परमेश्वर की निज सम्पत्ति होने की ऊंची और अद्‌भुत स्थिति तक पहुंचाया जाता है।

आइए आनन्दित हों कि हम उसकी ''निज प्रजा'' हैं।

सारांश

इस प्रकार, आज कलीसिया आत्मिक इस्राएल अर्थात परमेश्वर का इस्राएल है। पुराने इस्राएल की तरह ही आज हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। पुराने नियम के समयों की तरह ही आज हमारे पास भी याजकाई है। जैसे इस्राएल परमेश्वर की पवित्र प्रजा थी, वैसे ही कलीसिया भी आज परमेश्वर की पवित्र प्रजा है। जैसे परमेश्वर ने पुराने समय में इस्राएल को अपने लोग बनाने के लिए बुलाया था, वैसे ही आज मसीही युग में परमेश्वर मसीह की कलीसिया को अपनी निज प्रजा के रूप में मानता है।

नवम्बर के चौथे गुरुवार को अमेरिकी लोग धन्यवाद का दिन मनाते हैं। हम जानते हैं कि नये नियम में कहीं भी किसी विशेष दिन को धन्यवाद के दिन के रूप में मनाने की आज्ञा नहीं है, बल्कि इसमें निरन्तर आचरण अर्थात हर दिन धन्यवाद देने की बात बताई गई है। नये नियम में धन्यवाद देना किसी नियुक्त दिन के लिए नहीं है क्योंकि यह तो स्वभाव में ही होना चाहिए। पौलुस ने मसीही लोगों की विशेषता बताते हुए कहा, ''सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो'' (इफिसियों 5:20)। मसीही लोगों को मिलने वाली आशिषों पर विचार करने पर हम आसानी से समझ सकते हैं कि नया नियम हमें हर रोज धन्यवाद देने के लिए क्यों कहता है। ''चुने हुए लोग,'' ''पवित्र लोग,'' ''याजकों का शाही समाज,'' और ''परमेश्वर की निज प्रजा'' होने के कारण, हमें सचमुच आशीष मिली है, और हमें हर रोज ''गिनो सारी बरकत, गिनो नाम बनाम'' गीत गाते हुए उन आशिषों को गिनते रहना चाहिए।

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो आप परमेश्वर द्वारा मनुष्य को पेश की जाने वाली सबसे अच्छी और सबसे बड़ी आशिषों को आप गंवा रहे हैं। अब जबकि आप समझ गए हैं कि परमेश्वर ने कलीसिया को क्या आशीष दी है क्या आप परमेश्वर को इसकी अनुमति देंगे कि वह आपको इसका भाग बना ले?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''समय का पूरा होना'' वाक्यांश की संक्षेप में व्याख्या करें।
2. पुराने नियम के काल ने मसीह के आने के लिए संसार को कैसे तैयार किया?
3. मसीही लोगों को परमेश्वर की निज प्रजा कैसे कहा जा सकता है?
4. परमेश्वर के साथ हमारी स्थिति परमेश्वर की दया, हमारे विश्वास और आज्ञा मानने पर निर्भर है। इसकी तुलना उस स्थिति से कीजिए जो गुणों पर आधारित है।
5. पुराने नियम की व्यवस्था में कौन-कौन सा गोत्र या लोगों के किस भाग से याजक चुने जाते थे।
6. पुराने नियम के समय में याजक कौन होते थे?
7. ''याजकाई'' के साथ सम्बन्ध में ''राजसी/शाही'' शब्द क्या संदेश देता है?
8. कलीसिया किस अर्थ में ''पवित्र लोग'' है?
9. वर्णन करें कि एक मसीही किस प्रकार से दो देशों का नागरिक है?
10. ''निज प्रजा'' अभिव्यक्ति की परिभाषा दें?
11. मसीही लोगों के परमेश्वर के विशेष लोग होने का विचार करने पर आपके ध्यान में कौन सी आशिषें आती हैं?
12. आज हम आत्मिक इस्राएल में कैसे प्रवेश करते हैं?